IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

अहिंसा की अवधारणा व भारतीय दर्शन (बौद्ध जैन व महात्मा गांधी का एक वैचारिक अध्ययन)

अरुण प्रताप सिंह (पीएच.डी. शोधार्थी)
दिल्ली विश्वविद्यालय,
बौद्ध अध्ययन विभाग

मानव सभ्यता अपने उद्भव काल लेकर अपने वर्तमान समय तक अपना जीवन अहिंसात्मक रूप में व्यक्ति करने में प्रयासरत रही है, जिसमें भारतीय धर्मों का विशेष रूप में योगदान समाहित रहा है। भारतीय व विदेशी चिन्तकों द्वारा अनेको बार भारतीय दर्शन अध्ययन करने का भरपूर प्रयास किया गया तथा जिन–जिन विषयों व संदर्भों के द्वारा इस विषय पर सुझावों को दिया गया है मूलतः उन्हीं समग्र सुझावों पर पूर्व व पश्चिम के इतिहासकारों ने तथा राजनीतिज्ञों ने अपने यहाँ अहिंसात्मक राज्य की नींव रखने का कार्य किया है।

अहिंसा ने वास्तव में अपने उद्भव काल से लेकर वर्तमान समय तक सम्पूर्ण पृथ्वी पर जीवित प्राणियों को पूर्ण रूप में सुरक्षा प्रदान करने का कार्य रहा है। अहिंसा वास्तव में मूल रूप से भारतीय दर्शन का एक मुख्य बिन्दु रहे हैं। इसी के साथ ही साथ यह भी कहा जा सकता है कि सम्पूर्ण विश्व को एक अहिंसात्मक मंच प्रदान करने में इन प्रमुख भारतीय धर्मों के प्रचार व प्रसार में अहिंसा का प्रमुख योगदान रहा है जिसका प्रभाव सम्पूर्ण विश्व पर आसानी से देखा व समझा जा सकता है। जहाँ विश्व के अनेकों धर्मों में हिंसा को उचित माना गया तथा उसे भी धर्म में कहीं न कहीं अप्रत्यक्ष रूप से स्वीकार करने का प्रयास किया गया है, जिसके कारणवश सम्पूर्ण विश्व पर युद्ध के काले बादल सर्वथा ही छाये रहते हैं। परन्तु यदि हम "भारतीय दर्शन की परंपरा में अहिंसा के विषय पर दृष्टिपात करें तो सम्पूर्ण विश्व की विचारधारा का स्वरूप ही बदल जायेगा। भारतीय दार्शनिक परंपरा में अहिंसा का एक अमिट योगदान रहा है, जिसको अनदेखा कर पाना अंसभव कार्य प्रतीत होता है।

वर्तमान समय में वैश्विक परिस्थित को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि शिक्षा का मूल उद्देश्य चाहे मानव–संस्कृति ही क्यों न हो। मगर हम इस शिक्षा में धर्म के स्थान को अनदेखा नहीं कर सकते है जिसमें मानवीय विकास, मानवीय संस्कृति, शिक्षा व राज्य निर्माण के साथ–साथ राष्ट्र की विचारधारा को अपनाने का कार्य धर्म के माध्यम से ही किया गया है। यहाँ तक की मानवों को संगठित रहना व एक समूह में रहना भी कहीं न कहीं अप्रत्यक्ष रूप में धर्म के माध्यम से ही संभव हो पाया है। परन्तु कहीं न कहीं यह भी सत्य है कि भारतीय धार्मिक इतिहास पर कहीं न कहीं कुठाराघात किया गया है, जिसके कारणवश भारत में जन्में धर्म कहीं न कहीं भारत से ही विलुप्त होने की राह में अग्रसर है। जिसको आने वाली पीढ़ियों की धरोहर समझकर रखा जाना हम सभी भारतीयों का कर्त्तव्य है। इतिहास में धार्मिक आधारों पर की गयी क्रूरता के कारणवश ही भारतीय समाज में पश्चिमी सभ्यता ने भी अपनी पैठ बना ली है। यही कारण है, कि भारतीयों का हृदय बहुत तुच्छ बनकर रह गया है, जिसके कारण यह सम्भव ही नहीं हो सकता है, कि विशाल भारतीय धार्मिक संस्कृति की संवेदनशीलता को तुच्छ भारतीय हृदय व अनुदान मन में समा सके। मानव ने हालांकि उनके इस विशाल व महान हृदय को धार्मिक वाणी या भगवद्वाणी के रूप में श्रद्धा भाव से देखा, उनकी सच्चे मन से पूजा प्रतिष्ठा की व उन्हें सुनहरे वस्त्रों में आबद्ध कर भव्य मंदिरों व मठों आदि में सुरक्षित रखा। जिस रूप में ही सही परन्तु "भारतीय धार्मिक परंपरा में शांति व अहिंसा" को खोजने का कार्य अनेको विद्वानों व भारतीयों ने किया है। इसी कारणवश यह सत्य ही माना जा सकता है कि इन भारतीय धर्मों के सम्पूर्ण विश्व में प्रचार प्रसार हेतु शांति व अहिंसा का विशेष योगदान रहा है। फिर चाहे वह जैन धर्म हो, बौद्ध धर्म हो या फिर महात्मा गांधी की अहिंसात्मक विचारधारा की हो। जहाँ तक धर्म के अन्दर व्याप्त अहिंसा की बात की जाये तो यह तथ्यों के साथ विद्यमान है, कि कोई भी धर्म हिंसा की बात नहीं करता है, अपितु व सुख, समृद्धि, विकास, नैतिक कार्यों आदि के रूप को स्वीकार करने का कार्य करता है। यही कारण है, कि बौद्ध धर्म वर्तमान समय में विश्व के प्रमुख धर्मों में लगभग चौथेस्थान पर विद्यमान हो गया है जिसका सर्वप्रमुख कारण है बौद्धधर्म का शांति व अहिंसा के प्रति अटूट विश्वास। बौद्ध धर्म ने अपने उद्भव काल से ही शांति अहिंसा के पालन को अपना प्रमुख लक्ष्य घोषित किया हुआ है। बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध ने तत्कालीन रूढ़िवादी विचारों, कुरीतियों व अंधविश्वासों का खंडन कर एक सहज मानवधर्म की स्थापना की।

उन्होंने अपने जीवन पर्यन्त संयम, सत्य, शांति व अहिंसा का वास्तविक रूप में पालन करते हुए, पवित्र व सरल जीवन व्यतीत करने पर विशेष बल दिया। इसी के साथ ही तथागत ने कर्म–भाव और ज्ञान के साथ सम्यक को साथ मिलाने पर बल दिया। उनका विश्वास था कि, कोई भी 'अति' शांति नहीं प्रदान कर सकती। इसी प्रकार से मनुष्यों व प्राणियों को पीड़ाओं तथा भय से मुक्ति मिल सकती है व भय मुक्ति एवं शांति को ही तथागत ने निर्वाण भी कहा है।

इसी प्रकार से बौद्ध धर्म के अतिरिक्त अन्य भारतीय धर्मों जैसे कि सनातन धर्म व जैन धर्म आदि में भी अहिंसा को लेकर एकरूपता नजर आती है। इनके अन्दर भी बौद्ध धर्म के समान ही हिंसा मार्ग त्यागकर अहिंसा के मार्ग पर चलने का संदेश दिया है। "भारतीय धार्मिक परंपरा में अहिंसा" में बौद्ध धर्म के साथ–साथ सनातन धर्म, जैन धर्म आदि धर्मों में व्याप्त अहिंसा का स्थान उन धर्मों के प्रचार–प्रसार में मुख्य रूप में इन दोनों धर्मों का योगदान भी रहा है।

वर्तमान में जहाँ मनुष्य एक दूसरे के प्रति अपने हृदय में वैमनस्य लेकर बैठे हैं वहीं भगवान बुद्ध ने व अपने अपने धर्मों के महापुरुषों ने जिस प्रकार से अहिंसा के मार्ग को आत्मसात करके तथा उसे प्रचारित व प्रसारित करने का कार्य किया है वास्तव में वह अद्वितीय कार्य है।

यह कहने में बिल्कुल भी संकोच नहीं करना चाहिए की अहिंसा इस संपूर्ण संसार में एक प्रमुख शक्ति का नाम है जो कि सम्पूर्ण प्राणी जगत के साथ–साथ अस्तित्व, सह–सम्बन्ध, पर्यावरण संरक्षण, राष्ट्र व शांति के साथ सामानजस्य बनाकर, सौहार्द बनाने का कार्य करती है। क्योंकि यह तथ्यों के साथ प्रमाणित हो चुका है कि अहिंसा के अभाव में बैर या शत्रुता उत्पन्न होने लगती है, जो कि मानवों को सर्वथा ही विघटन या पतन की ओर लेकर जाता है। मानव में जब सभ्यता का विकास हुआ तो उसके साथ ही उसे यह एहसास होने लगा था कि किसी भी प्रकार से हिंसा के साथ विकास संभव नहीं, अपितु पतन अवश्य ही निश्चित है। हिंसा विनाश की सूचक होती है। इसी कारणवश यह आसानी से कहा जा सकता है कि हिंसा कभी भी किसी भी व्यक्ति, समाज, राज्य या फिर राष्ट्र का आधार नहीं बन सकती है। परन्तु यहाँ मानव का दुर्भाग्य ही कहा जायेगा कि वह वर्तमान समय में इस तथ्य की अनदेखी कर रहा है। यह पूर्णतः सत्य है कि मानव अपने प्राकृतिक स्वाभाव से एक सामाजिक प्राणी है। इसी कारणवश वह

सह–अस्तित्व के साथ ही उन्नति कर सकता है, और सत्य यही है कि अहिंसा ही सह–अस्तित्व की प्राथमिक अनिवार्यता है।

धर्म मानव जीवन का शाश्वत सत्य है। सत्य साक्षात्कार या आत्म–साक्षात्कार की प्रक्रिया का नाम है। इस दृष्टि से यदि ध्यानपूर्वक देखा जाये तो धर्म को एक अखण्ड चेतना की संज्ञा प्रदान की जा सकती है तथा इस चेतना को धर्म से विभक्त कर पाना कठिन कार्य है। यदि व्यवहारिक दृष्टि से देखा जाये तो धर्म के अनेक भेद होते हैं, जैसे कि दया, करुणा, प्रेम, क्षमा, सत्य, तप आदि। इन्हीं सब आदि भेद को ध्यान में रखकर धर्म के अनेक रूप सामने यदि आएं तो भी आपस में उनमें भेद उत्पन्न नहीं होगा। वास्तव में यदि मतभेद व्याप्त है, तो वह है सम्प्रदायों में। क्योंकि धर्म ने वर्तमान समय में अपने वास्तविक अर्थ को खो दिया है, तथा वह सम्प्रदायों में परिवर्तित हो चुका है। सम्प्रदाय का अस्तित्व विचार भेद की परिणति का ही परिणाम है। यदि ध्यानपूर्वक देखा जाए तो किसी भी देशों में या राज्यों में भिन्न–भिन्न मतों व विचारों का होना कोई बड़ी समस्या नहीं है। अपितु समस्या तो यह है कि अपने को सर्वोच्च मानकर अन्य मतों या विचारों को तुच्छ या हीन मान लेना सदभावों का बीजारोपण वास्तव में वहीं से होता है।

जैन धर्म, बौद्ध धर्म व महात्मा गांधी जी ने जिस सच्चाई, अहिंसा, शांति, प्रेम, सद्भाव आदि का मार्ग प्रशस्त किया है, वास्तव में वही धर्म है। जैन दर्शन के मूलभूत सिद्धान्तों पर यदि ध्यानपूर्वक दृष्टिपात करें तो यह तथ्य स्वतः ही सामने प्रकट हो जाता है कि सत्य के निरेपक्ष आध्यात्मिक स्वरूप के अतिरिक्त सापेक्ष उपयोगी सत्य को भी आचरण का आधार बनाया जा सकता है। बौद्ध दर्शन का एक वास्तविक अभिप्राय इस सामाजिक विचारधाराओं के साथ संयुक्त रूप से सम्मिलित होता है। बौद्ध धर्म में अष्टांगिक मार्ग के रूप में विद्यमान चार–आर्य सत्य का विश्लेषण भी शील, समाधि, प्रज्ञा के रूप में प्रकट होता है। जिसमें शील को मुख्य रूप से संतुलित जीवनशैली के रूप में देखा जा सकता है जो जीवन की द्विआधारित पद्धति (निरपेक्ष और सापेक्ष) के बीच में संतुलन की अवस्था है। यदि अहिंसा की ओर से शील अनुपालन क्रमशः अधिक स्वाभाविक रूप में जान पड़ता है, जो पूर्ण सिद्ध अवस्था में प्रज्ञा रूप में अवतरित हो जाता है। यह प्रज्ञा वास्वत में सामाजिक जीवन में मानव के स्वाभाव व आचरण तथा लोकाचार

का संतुलन है, जिसके द्वारा समाज में मिथ्याचारिता, पापचारिता, लोभवृति दुर्गुणों आदि से छुटकारा पाया जा सकता है। महात्मा गांधी ने बौद्ध धर्म व जैन धर्म को एक अहिंसक परन्तु उपयोगितावादी सन्तुलन धारणा को प्रयोगिक रूप में व्यक्त किया है। साधारण तौर पर यह गांधी जी का विश्वास था कि व्यक्तिगत जीवन में संतुलन से शामिल करनेसे एक मूल्य आधारित, सत्य आधारित अहिंसात्मक, व शान्तिप्रिय समाज की स्थापना की जा सकती है।

बौद्ध दर्शन, जैन दर्शन तथा महात्मा गांधी के दर्शन के आध्यात्मिक सत्य रूपी निरपेक्ष को प्राप्त करने का साधन सामाजिक सत्य का आचरण है, जो वास्तव में अहिंसा की भावना है। बौद्ध दर्शन में तथागत द्वारा निर्मित मध्यम–मार्ग की व्याख्या से पारिस्थितिकीय तन्त्र के संतुलित उपयोग को समझा जा सकता है, जिसमें जीवन का यथार्थ धरातल में कई प्रकार की चुनौतियों से युक्त होता है। यानि की तथागत ने अत्याधिक अति को भी स्वीकार नहीं किया है, बल्कि महात्मा बुद्ध ने मध्यम मार्ग का पक्ष लेते हुए यह कहा था, कि "जीवन वीणा के तार को इतना भी मत खींचों की टूट जाए" किंतु अनावश्यक रूप से व्यर्थ दोहन करने की प्रवृत्ति का त्याग करना चाहिए। जबकि जैन धर्म अहिंसा की विचारधारा को लेकर और भी अधिक रूढ़िवादी है, तथा वह मूल रूप जैन दर्शन में प्राप्त अनेकान्तवाद का सिद्धान्तवाद का बौद्ध मत के मध्यम–मार्गीय प्रवृत्ति का समानार्थक माना जाना चाहिए।

अतः साधारण अर्थों में यह माना जाता है कि अहिंसा सभी धर्मों का मूल आधार है तथा कोई भी धर्म अहिंसा से न तो अलग है और न ही उसे अलग ही किया जा सकता है। अहिंसा की उत्तम व्यवस्था की स्थापना जीवों पर दया, करुणा, दयालुता आदि करके की जा सकती है। अरण्य काल में ही ऋषि मुनियों ने माना है कि "इस सम्पूर्ण जीव जगत में अनेकों प्राणी एक जैसे हैं, अर्थात् सभी जीवों में आत्मा विद्यमान है तथा चैतन्य समाविष्ट है। मानव में उस चैतन्य का अधिकतम स्फुरण है। अतः उस प्राणी को अन्य सभी प्राणियों के साथ मिलकर ही अपना जीवनयापन करना चाहिए।" बौद्ध दर्शन में अहिंसा का वर्णन "चतुर्थ आर्य सत्य" दुःख–निरोध मार्ग" के अष्टांगिक मार्ग में पूर्ण रूप में प्राप्त होता है, जिसमें "सम्यक दृष्टि" के माध्यम से सर्वप्रथम जीव हिंसा को पाप अथवा दुराचार बताया गया है। वहीं यदि बौद्ध धर्म में ही 'माज्झिम निकाय' को देखें तो उसमें जीव हिंसा न करना साधारण बतलाया गया है। बौद्ध धर्म में अन्य

जीवों के प्रति प्रेम, दया, करुणा, दिखलाना 'अष्टांगिक मार्ग' के सम्यक संकल्प में अहिंसा का वर्णन प्रत्यक्ष तौर पर देखा जा सकता है। जिसमें कहा गया है कि "भिक्षुओं सम्यक कर्मान्त क्या है? एक आदमी जीव हिंसा को छोड़कर जीव हिंसा से दूर रहता है। वह दण्ड का प्रयोग नहीं करता, शस्त्र का प्रयोग नहीं करता, लज्जाशील, दयावान, सभी प्राणियों पर अनुकम्पा करने वाला होता है।"

वहीं यदि अहिंसा को जैन धर्म में खोजा जाये तो जैन धर्म में अहिंसा का विशद् वर्णन देखने को मिलता है। जैन धर्म अहिंसा का जितना व्यापक स्वरूप देखने को मिलता है उतना व्यापक विश्व के अन्य धर्मों में शायद ही देखने को प्राप्त हो। जैन धर्म में प्रत्येक मानवों हेतु प्रतिदिन जीवन का जो कार्य या व्यवहार होता है, उसमें अहिंसा पर सर्वाधिक बल दिया गया है। यहाँ पर अहिंसा का अर्थ वास्तव में बहुत ही व्यापक अर्थों में लिया गया है। जैन धर्म में अहिंसा का अर्थ लिया गया है– "हिंसा का परित्याग। "सम्यक चरित्र" के "पांच महाव्रतों" में अहिंसा का वर्णन मिलता है। जैन धर्म में जीवों की समानता मान्यता प्राप्त हुई है। क्योंकि माना यह जाता है कि "जब एक जीवन दूसरे को समान समझेगा तभी वह अन्य जीवों के दया, करुणा का भाव उत्पन्न कर पायेगा।" और इस स्थिति में हिंसा का भाव नहीं उत्पन्न हो पायेगा। जैन साधुओं या भिक्षुओं ने अहिंसा की एक अलग ही पराकाष्ठा को लिखने का प्रयास किया है, जैसे कि खाने–पीने, पर्यटन तथा मांस लेने की क्रियाओं में सूक्ष्मातिसूक्ष्म जीवों के प्रति भी अहिंसा के भाव को आत्मसात करना ही श्रेयस्कर माना है। उन्होंने अहिंसा के पालन हेतु तन, मन व कर्म तीनों के माध्यम से करने पर जोर दिया है।

वहीं गांधी जी ने हिंसा को निषेध करते हुए लिखा कि "यह निषेध, वाणी और कर्म तीनों पर विचार–विमर्श किया जाना अति आवश्यक है।" आगे उन्होंने लिखा है– "किसी को न मारना इतना तो है ही कुविचार मात्र हिंसा है। उतावली हिंसा है। मिथ्या भाषण हिंसा, है, द्वेष हिंसा है। किसी का बुरा चाहना हिंसा है। जगत के लिए जो आवश्यक वस्तु है उस पर कब्जा रखना भी हिंसा है।" इसका अर्थ है कि द्वेष, दुभार्वना, दुर्वचन, निर्दयता, घृणा आदि नीच प्रवृतियाँ हिंसा की श्रेणी में आती है। वहीं अहिंसा हेतु यह आवश्यक है कि वह इन सभी नीच प्रवृतियों का परित्याग करे। अर्थात इन सभी का परित्याग करे। अर्थात् इन सभी का परित्याग ही अहिंसा का

अभावत्मक या निषेधात्मक स्वरूप है। इस क्रिया में यह ध्यान रखना आवश्यक है कि व्यक्ति का उसके शत्रुओं के साथ भी होने वाला व्यवहार भी नीच प्रवृति का नहीं होना चाहिए। अहिंसक व्यक्ति का हृदय सदा ही पवित्र शुद्ध व निर्मल होना चाहिए तथा उसके मन में किसी के प्रति भी बुरे व हिंसक विचारों का न होना ही अहिंसा है। इन विचारों के अनुसार आचार भी होता है। यदि इसके विचारों में हिंसा का अभाव या निषेध है तो उसके आचारों में भी हिंसा का अभाव ही होगा।

अतः साधारण रूप में केवल यही माना जा सकता है कि वर्तमान समय में अहिंसा रूपी अस्त्र की आवश्यकता प्रत्येक धर्म को है, जिससे की वैश्विक शांति का सूत्रपात हो। वर्तमान समय में जिस प्रकार से हिंसा का विकराल रूप या प्रतिबिम्ब में विद्यमान हो चुका है वह सम्पूर्ण मानव जाति हेतु एक संकट पैदा कर रहा है। इस संकट या समस्या के समाधान हेतु सम्पूर्ण विश्व भारत की ओर आस लगाए हुए बैठा हुआ है। क्योंकि वैश्विक शांति का मार्ग भारत से होकर ही गुजरता है। भारत में ही बौद्ध धर्म, जैन धर्म, सनातन धर्म व गांधीवादी परंपरा का सूत्रपात हुआ जिसने सम्पूर्ण विश्व को अहिंसा व शांति का पाठ पठाया।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1. चतुर सेन, आचार्य, बुद्ध और बौद्ध धर्म
2. कबीर, हुमायूँ, भारतीय शिक्षा दर्श
3. नरेन्द्र देव, आचार्य : बौद्ध धर्म दर्शन
4. मिश्र, उमेश : भारतीय दर्शन
5. दीघ निकाय, राहुल सांकृत्यायन (हिंदी अनुवाद), सारनाथ, वाराणसी, 1936
6. रामायण, बाल्मीकि, गीता प्रेस, गोरखपुर, वि.सं. 1064
7. महावंश, भदन्त आनन्द कौशल्यायन (हिंदी अनु.), प्रयाग : हिंदी साहित्य सम्मेलन, 1942
8. आचार्य महाप्रज्ञं, विश्वशांति और अहिंसा, लाडनूँ : जैन विश्वभारती, 2003
9. जैन, हुकुमचन्द्र, विश्वशांति और जैन धर्म शाँची : संतोष प्रकाशन, 1990
10. शर्मा, हरिदत्त, मानसिक शांति के रहस्य, दिल्ली : पुस्तक भवन, 2004
11. 'भाष्कर' भागचन्द्र जैन, बौद्ध संस्कृति का इतिहास, नागपुर : अशोक प्रकाशन, 1972

12. विनय पिटक, परमानन्द सिंह (सं.) वाराणसी : बौद्ध अकार ग्रंथमाला, काशी विद्यापीठ, 1994

13. धम्मपद, राहुल सांकृत्यायन (सं.), लखनऊ : भारतीय बौद्ध शिक्षा परिषद्, 1998

14. ऋग्वेद, पूना : वैदिक शोध संस्थान, 1937–1946

15. सराओ, के.टी.एस. प्राचीन बौद्ध धर्म : उद्भव, स्वरूप और पतन, दिल्ली : दिल्ली विश्वविद्यालय (हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय), 2004

16. आचार्य महाप्रज्ञ, अहिंसा और शांति, नई दिल्ली : आदर्श साहित्य संघ, 2005

17. रामेश्वर मिश्र 'पकंज', गांधी जी की विश्व दृष्टि, मानक पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली– 1994

18. गांधी, मो.क. : सत्य ही ईश्वर है, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, 1957

19. गांधी, मो.क. : विश्व शांति का अहिंसक मार्ग, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद

20. ऋग्वेद संहिता, वैदिक संशोधन मण्डल, पूना 1941

21. वैदिक धर्म एवं दर्शन भाग–2, सूर्यकान्त (अनुवादक), मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1965

22. तत्वार्थसूत्र, अनु. मेघराज मुडौल, रत्न प्रभाकर ज्ञान पुण्य मालना, फलोगी, सम्वत, 1989

23. भगवती सूत्र भाग–16 घासीलाल जी, जैन शास्त्रोाहार राजकोट, 1964

24. जैन धर्म में अहिंसा, डॉ. विशिष्ट नारायण सिन्हा, पार्श्वनाथ, विद्याश्रम शोध संस्थान, वाराणसी, 1972

25. जैन दर्शन, पं. महेन्द्र कुमार, गणेस प्रसाद ग्रंथावी, जैन ग्रंथावली, काशी, 1955

26. अहिंसा और सत्य, स. श्री रामनाथ "सुमन" मुद्रक सम्मेलन, मुद्राणालय, प्रयाग।

27. अहिंसा और शांति, युवाचाय महाप्रज्ञ, पु. आदर्श साहित्य संघ

28. सत्याग्रह और विश्व शांति, सांनाथ दिवाकर, प्र. प्रोगिसिब पब्लिशर्स, 14, डी., फिरोजशाह रोड, नई दिल्ली

29. मेरे सपनों का भारत, महात्मा गांधी, सस्ता साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1964